RJPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.035

2024 लोकसभा चुनावों के संदर्भ में हरियाणा विधानसभा चुनाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रमेश कुमार
शोधार्थी, (राजनीतिकशास्त्र विभाग)
एम. एम. कॉलेज, मोदीनगर,
गाजियाबाद
ईमेलः iamramesh1112@gmail.com

डॉ0 सुधीर कुमार
शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक
(राजनीतिकशास्त्र विभाग)
एम. एम. कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद
ईमेलः sudhirintouch@gmail.com

सारांश

यह शोध पत्र हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रदान करता है, जो राज्य की राजनीतिक गतिशीलता पर लोकसभा चुनावों के प्रभाव की खोज करता है। यह राज्य और राष्ट्रीय चुनाव अभियानों, राजनीतिक दलों की भूमिका, उम्मीदवारों की प्रोफाइल और मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख मुद्दों के बीच परस्पर क्रिया की जांच करता है। हरियाणा की राजनीति में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बीच गहरा संबंध है। 2024 के लोकसभा चुनावों के परिणामों ने राज्य की राजनीतिक दिशा और मतदाताओं की प्राथमिकताओं को स्पष्ट रूप से प्रभावित किया, जिसका असर अक्टूबर 2024 में हुए विधानसभा चुनावों पर भी पडा। यह शोध पत्र दोनों चुनावों के बीच के संबंध और प्रमुख मुद्दो के आधार पर मतदाताओं के व्यवहार में आए बदलाव का विश्लेषण करता है। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन राज्य स्तरीय लाभ के लिए राष्ट्रीय राजनीतिक माहौल का लाभ उठाने के लिए राजनीतिक दलो द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की जांच करता है। यह जनसांख्यिकीय रूझानों, जातिगत गतिशीलता और स्थानीय मुद्दों के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए हरियाणा मे मतदाता वरीयताओं को आकार देने वाले सामाजिक राजनीतिक

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 28/08/25
Approved: 18/09/25

रमेश कुमार
डॉ0 सुधीर कुमार

2024 लोकसभा चुनावों के संदर्भ में हरियाणा विधानसभा चुनाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

RJPP Apr.25-Sept.25,
Vol. XXIII, No. II,
Article No.35
Pg. .261-270
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.035

कारकों पर भी प्रकाश डालता है। इस पत्र का उद्देश्य यह जानकारी देना है कि कैसे लोकसभा चुनाव 2024 हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 परिणामों का अग्रदूत हुआ और भारत व प्रदेश की राजनीति में व्यापक राजनीतिक विमर्श में योगदान दिया।

मुख्य शब्द

हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024, लोकसभा चुनाव, राजनीतिक अभियान, मतदाता व्यवहार, राजनीतिक दल, चुनावी रणनीति, जनसांख्यिकीय रूझान, जातिगत गतिशीलता, सामाजिक राजनीतिक कारक।

परिचय

2024 के लोकसभा चुनावों के हरियाणा विधानसभा चुनावों पर गहरा असर डाला। लोकसभा में भाजपा और कांग्रेस को 55 सीटें मिलने के बाद विधानसभा चुनावों में भी कडी प्रतिस्पर्धा देखी गई जिन 33 सीटों पर मामूली अंतर था, वे निर्णायक साबित हुई। कांग्रेस ने लोकसभा परिणामों के आधार पर आत्मविश्वास तो दिखाया, किंतु छोटे दलों को साथ न लाने और प्रबंधन की कमियों के कारण वह 37 सीटों तक सीमित रह गई, जबकि भाजपा ने रणनीति बदलकर 48 सीटें जीतीं। बूथ स्तरीय आंकडे बताते हैं कि भाजपा ने शहरी क्षेत्रों में पकड़ बनाए रखी, जबकी कांग्रेस को ग्रामीण और अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में बढत मिली।

हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्य जातिगत संरचना,आंदोलनों और मतदाता व्यवहार से गहराई से प्रभावित रहा। संविधान बचाओ आंदोलन, किसान आंदोलन और अग्निवीर योजना जैसे मुद्दों ने भी चुनावी वातावरण को आकार दिया। इस शोध में 90 निर्वाचन क्षेत्रों के मतदान पैर्टन, राजनीतिक दलो की रणनीतियों, सामाजिक संरचना और चुनाव प्रबंधन की भूमिका का विश्लेषण किया गया। यह अध्ययन राजयीय और राष्ट्रीय राजनीति के अंतर्संबंध को उजागर करता है तथा बताता है कि हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 किस प्रकार राष्ट्रीय राजनीति प्रवृतियों का प्रतिबिंब और आगामी चुनावों का संकेतक बन सकता है।

अध्ययन क्षेत्र

हरियाणा में 22 जिलें है, जिनमें 90 विधानसभा क्षेत्र हैं, (चित्र 1) उत्तरी राज्य हरियाणा में 73 सामान्य और 17 अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित सीटें है। राज्य में कुल मतदाताओं में सें अनुमानतः लगभग 27 प्रतिशत जाट, 21 प्रतिशत अनुसूचित जाति, 8 प्रतिशत पंजाबी, 7,5 प्रतिशत ब्राहमण, 7 प्रतिशत मुस्लिम, 5 प्रतिशत जाटव, और 5 प्रतिशत वैश्य, 4 प्रतिशत जाट सिख, 3,4 प्रतिशत राजपूत और 3,4 प्रतिशत गुज्जर, 3 प्रतिशत सैनी है। 2014 तक जाट हरियाणा की राजनीति का केन्द्र थे और चुनावों पर उनका दबदबा था, उसके बाद परिदृश्य तेजी से बदल रहा है और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

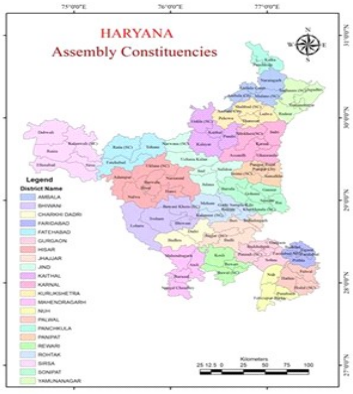

मानचित्र 1: हरियाणा विधानसभा जिलेवार सीटों का वर्गीकरण

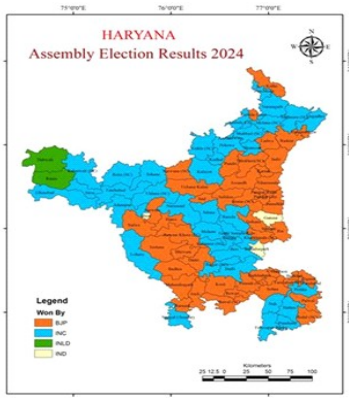

मानचित्र 2 विधानसभा चुनाव परिणाम 2024

तलिका 1 हरियाणा चुनाव में प्राप्त मत प्रतिशत की तुलना (चित्र 2019–2024)

राजनीतिक पार्टी / वर्ष	2019	2024	लाभ या हानि
भाजपा	36.49	39.94	3.45
कांग्रेस	28.08	39.09	11.01
इनेलो	2.44	4.14	1.7
बसपा	4.21	1.82	–2.39
जेजेपी	14.8	0.9	–13.9

स्त्रोतः चुनाव आयोग हरियाणा वेबसाइट

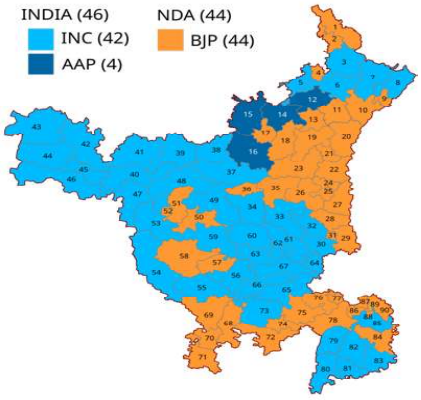

मानचित्र 2 : हरियाणा लोकसभा चुनाव विधानसभा वार अग्रिम स्थिति 2024
स्त्रोत https://en.wikipedia.org/wiki/2024_Indian_general_election_in_Haryana

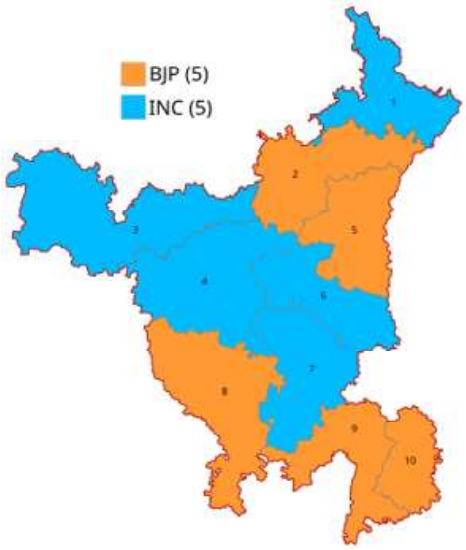

मानचित्र 3: 2024– लोकसभा चुनाव के लिए हरियाणा का सीटवार परिणाम

स्त्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/2024_Indian_general_election_in_Haryana

हरियाणा में 2024 लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बराबरी पर प्रदर्शन किया,दोनों ने 10 में से 55 सीटें जीतीं। कांग्रेस ने कुरूक्षेत्र सीटें आम आदमी पार्टी को छोड दी थी, जहां AAP को हार का सामना करना पड़ा। 2019 में शून्य पर रही कांग्रेस इस बार 5 सीटों के साथ मजबूत वापसी करने में सफल रही और उसका वोट शेयर 28.42% से बढ़कर 47.61% हो गया। वही भाजपा का वोट शेयर 58.2% से घटकर 46.11% पर आ गया। चुनाव में 64.77% मतदान हुआ (2019: 59.2%) भाजपा को किसान विरोधी छवि और जाट विरोध का नुकसान हुआ जबकि कांग्रेस ने जाट और दलित मतदाताओं में पकड़ मजबूत की। कांग्रेस न रोहतक, हिसार और SC आरक्षित सीटें (अंबाला, सिरसा) पर बेहतर प्रदर्शन किया, जबकि भाजपा ने OBC और गैर जाट वोट से कुरूक्षेत्र व करनाल जैसी सीटें जीती। क्षेत्रीय दल JJP, INLD, BSP का जनाधार काफी घटा, JJP का वोट 0.87% और INLD–4% पर सिमट गया। विधानसभा चुनाव 2024 में भाजपा ने 48 सीटों के साथ लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। कांग्रेस को 37 सीटें, INLD को 2 और निर्दलीयों को 3 सीटें मिली, जिन्होनें भाजपा को समर्थन दिया। भाजपा ने 8 सीटों पर 20% से अधिक के अंतर से जीत दर्ज की, जबकि 10 सीटों पर पहली बार विजय हासिल की। हालांकि, नूंह, फिरोजपुर, झिरसा, पुन्हाना, झज्जर, महम, जैसी 12 सींटो पर पार्टी अब तक जीत नही सकी और नूंह, सिरसा, झज्जर रोहतक व फतेहाबाद जिलों में खाता भी नही खोल पाई। JJP और BSP का वोट शेयर क्रमशः 13.9% और 2.39% घटा, जिससे वे पूरी तरह हाशिये पर चली गई। कुल मिलाकर भाजपा शहरी, OBC और गैर जाट वोट से सत्ता में लौटी, जबकी काग्रेस का वोट शेयर बढ़कर उसे मजबूत विपक्ष के रूप में स्थापित कर गया।

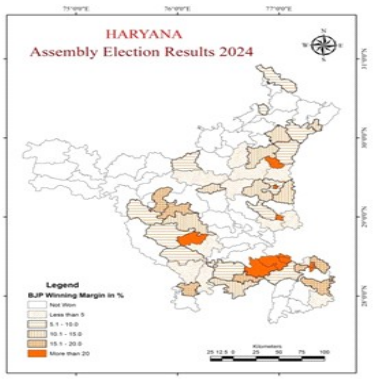

मानचित्र 4: भारतीय जनता पार्टी का प्रर्दशन

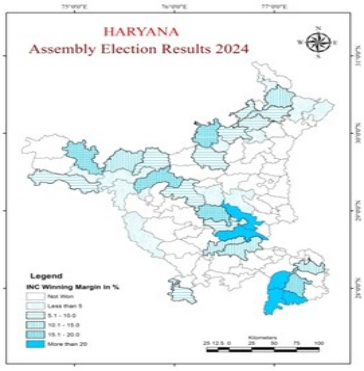

माानचित्र 5: कांग्रेस जीत का अंतर

हरियाणा में इस बार बीजेपी ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई है, बीजेपी हरियाणा में लगातार तीन बार सरकार बनाने वाली पहली पार्टी है, इससे पहले राज्य की जनता ने कभी किसी पार्टी को तीसरा मौका नही दिया, भारतीय जनता पार्टी ने 48 विधानसभा सीटों पर जीत हासिल की और 8 सीटों पर उनकी जीत का अंतर 20 प्रतिशत से अधिक था, ये हैं फरीदाबाद (33.82) गुड़गांव (29.57), पटौदी (29.57), बल्लभगढ़ (26.42) पानीपत शहर (24.29), भिवानी (22.52), करनाल (22.31) और सोनीपत (20.46) ये सीटें पांरपरिक रूप से भारतीय जनता पार्टी का गढ़ रही है, हांलाकि, राज्य में अभी 12 सीटें ऐसी हैं जहां बीजेपी एक बार भी नही जीती हैं, 10 सीटें ऐसी हैं जहां बीजेपी ने पहली बार जीत दर्ज की हैं, ये हैं समालखा, गोहना बड़ौदा, खरखोदा, सफीदो, नरवाना, बरवाला, दादरी, तोशाम और फरीदाबाद एनआईटी सीटें। वहीं नूंह, फिरोजपुर, झिरसा, पुन्हाना, जुलाना, डबवाली, महम, गढ़ी सांपला किलोई, झज्जर, बेरी, उकलाना, पृथला और कालांवाली सीटें इस बार भी बीजेपी के लिए दूर की कौड़ी बनी रही,इन सीटों पर बीजेपी अब तक अपना खाता नही खोल पाई हैं, हरियाणा विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने भले ही बंपर जीत हासिल की हो, लेकिन हरियाणा के 5 जिलों में वह अपना खाता नही खोल पाई, इन जिलों में नूंह, सिरसा, झज्जर, रोहतक, और फतेहाबाद, शामिल हैं, बेल्ट के हिसाब से देखा जाए तो ये जिले बागर, देसवाल, और अहीरवाल दक्षिण हरियाणा बेल्ट में आतें है, इन जिलों में कुल 19 विधानसभा सीटें हैं,

क्षेत्र	सीटें	भाजपा	कांग्रेस	इनेलो	निर्दलीय
अहीरवाल दक्षिण हरिसाण	23	17	6	0	0
बागर	19	6	10	2	1
देसवाल	21	10	9	0	2
ग्रांड ट्रंक रोड	27	15	12	0	0
कुल	90	48	37	2	3

स्त्रोतः लेखकों द्वारा गणना

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने निसंदेह मुस्लिम मतदाताओं की बड़ी संख्या वाली सीटों पर बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, खासकर नूंह, फिरोजपुर झिरका, पुन्हाना। 5 विधानसभा सीटे जंहा उनकी जीत का अंतर 20 प्रतिशत से अधिक वोटों का था, वे हैं फिरोजपुर झिरका (54.34) गढी सांपलो किलो (47.88), नूंह (30.31), अेरी (29.82) और पुन्हाना (21.82)। इनमें से नूंह, फिरोजपुर झिरका और पुन्हाना कांग्रेस के गढ हैं जहां 2018 के विधानसभा चुनाव में भी उनका प्रदर्शन ऐसा ही था। दूसरी और कांग्रेस ने जाट लैंड और बागर बेल्ट (टेबल 2) जीती। बागर ऐसा बेल्ट है,जंहा कांग्रेस का प्रदर्शन पिछली बार से बेहतर रहा है। पार्टी ने बागर बेल्ट अतिरिक्त 6 सीटें हासिल की हैं। इस बेल्ट में जाट मतदाता सबसे ज्यादा है। कांग्रेस 5 जिलों करनाल, पानीपत, चरखी, दादरी, रेवाड़ी, और गुड़गाव में अपना खाता नही खोल सकी। आम आदमी पार्टी के उम्मीदवारों ने कांग्रेस के वोट काटें, जिससे कांग्रेस को 4 सीटों का नुकसान हुआ। ये सीटें हैं असंध, उचना कंला, डबवाली और रानिया। हालांकि, इडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) 2 सीटें जीतने मे सफल रही। वही, 3 निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी अपनी सीट जीती। इस बार 5 सीटें ऐसी हैं जहां प्रत्याशियों की जीत हार का अंतर 50 हजार से ज्यादा वोटों को रहा। इनमें फिरोजपुर झिरका,गढ़ी सांपला किलोई, बादशाहपुर, पानीपत ग्रामीण और गुरूग्राम। इस बार हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 में 8 सीटें ऐसीं थी, जहां उम्मीदवारों की जीत और हार का अंतर 2000 वोटों से कम था। इनमें पंचकूला सढौरा, उचाना कंला, डबवाली, आदमपुर, लोहारू, दादरी और रोहतक शामिल हैं। उचाना कंला सबसे कम 32 वोटों के जीत के अंतर वाली सीट थी।

लोकसभा और विधानसभा चुनाव के महत्वपूर्ण मुद्दे और चुनावी रणनीतियांः

कांग्रेस पार्टी किसान विरोध, अग्निपथ योजना, बेरोजगारी, पहलवान विरोध और मुद्रा स्फीति जैसे मुद्दो के साथ भाजपा के खिलाफ सता विरोधी लहर सवार थी। वे अपने संगठनात्मक ढ़ांचा के अभाव,रणनीतिक कमजोरियों और अनुशासनहीनता के कारण इन ज्चंलत मुद्दो को भुना नहीं सके। चुनाव से पहले और चुनावी प्रक्रिया के दौरान उन्होनें भूपेंद्र सिहं हुड्डा (एक जाट नेता) को कांग्रेस पार्टी के प्रादेशिक नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी और कुमारी शैलजा एक प्रमुख दलित नेता को दर किनार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि दलित और पिछड़ी जातियों में जातियों ने कांग्रेस के खिलाफ मतदान किया और भूपेंद्र सिहं हुड्डा जाट मतदाताओं को भी पूरी तरह से पार्टी के पक्ष में लामबंद करने में सफल नही हुए। राज्य के लोग अब राज्य की राजनीति में क्षेत्रवादी, वंशवादी जाट प्रभुत्व से थक चुके है और राज्य राजनीति में नए विकल्पों की तलाश करते है। यंहा तक कि अनुसूचित जाति के मतदाता भी नाराज हो गए और उन्होने कुमारी शैलजा के निर्वाचन के क्षेत्र में भी काग्रेंस को बहुतायात में समर्थ नही दिया। इस चुनाव में स्पष्ट विजेता भाजपा रही जिसमें 6 आरक्षित सीटों पर जीत हासिल की। इसके पीछे भारतीय जनता पार्टी की अनुसूचित जाति के वर्गीकरण के मुद्दे की रणनीतिक सफलता भी रही। लोकसभा चुनाव में दलित वर्ग संविधान बचाओं अभियान के चलते काग्रेंस की तरफ लांमबद हुआ जबकि विधानसभा चुनाव में अनुसूचित जाति आरक्षण में वर्गीकरण की रणनीति अनुसार बीजेपी दलित वर्ग विशेषकर वचिंत अनुसूचित वर्ग में अपना प्रभाव जमाने में सफल रही। सवाल यह उठता है कि भाजपा ने एक हारी हुई लड़ाई कैसे जीत ली, जिसे मीडिया ने सभी एग्जिट पोल में जीत घोषित कर दिया था। सोशल इंजीनियरिंग और मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व ने उन्हें 20 सूत्री संकल्प पत्र तैयार करने में मदद की,जिसने मतदाताओं के लगभग

सभी वर्गो को लक्षित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सशक्त और राष्ट्रवादी छवि ने हरियाणा के मतदाताओं में भरोसा कायम रखा। 'डबल इंजन सरकार, की अवधारणा ने राज्य और केन्द्र सरकारों के बीच समन्वय को दर्शाया, जिससे मतदाताओं मे विकास की उम्मीद जागृत हुई इसके साथ साथ भाजपा का संगठनात्मक ढ़ाचा अत्यंत सशक्त रहा। प्रत्येक बूथ स्तर पर प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की तैनाती, मतदाता सूची का विश्लेषण, और घर घर संपर्क अभियान ने जनसमर्थन को प्रभावी रूप से भाजपा के पक्ष में किया। मनोहर लाल खट्टर की व्यक्तिगत सादगी, भ्रष्टाचार से दूरी, और प्राशसनिक फैसलों में पारदर्शिता ने उन्हे ग्रामीण व शहरी मतदाताओं के बीच लोकप्रिय बनाए रखा। भाजपा ने प्रचार के लिए सोशल मीडिया, व्हाट्सप अभियान, और संवाद यात्राओं का व्यापक और नियोजित उपयोग किया, जिससे युवाओं और पहली बार मतदाता बनें नागरिकों में सीधा संवाद संभव हो सका। इसकें कोई संदेह नही कि आरएसएस के स्वंयसेवको ने भाजपा के लिए प्रचार करने के लिए हर दरवाजे को छुआ और एक महत्वपूर्ण और जिसे मीडिया कवर करने में विफल रहा, वह था चुनावों के दौरान नारा ''बिना खर्ची, बिना पर्ची की सरकार'', जो स्पष्ट रूप से राज्य में पहले की जाट बहुल सरकारों के दौरान हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ थी। पार्टी ने 18 से 60 वर्ष की आयु की 78 लाख महिलाओं को 2100 रूपये मासिक आर्थिक मद्द, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो में गरीब लोगो के लिए आवास, हर घर ग्रहणी योजना के तहत 500 रूपये में सिलेंडर, 2 लाख स्थायी सरकारी नौकरियों के साथ वृद्धावस्था, विकलांग और विधवा पेंशन में बढोतरी की बात की। भाजपा ने राज्य में 18 से 19 वर्ष के बीच के लगभग 6 लाख 53 हजार मतदाताओं कों भी ध्यान मे रखा । चिरायु आयुष्मान योजना में 1.09 करोड़ लोगों को मुफ्त इलाज दिया गया। घोषणा पत्र में चिरायु आयुष्मान योजना के तहत हर परिवार को 10 लाख रूपये तक के मुफ्त इलाज और 70 साल से अधिक उम्र के हर वरिष्ठ नागरिक को अलग से 5 लाख तक के मुफ्त इलाज की सुविधा देने का वादा किया गया केंद्र। कांग्रेस पार्टी की तुलना में भाजपा अपने चुनावी घोषणा पत्र के माध्यम से लोगों को विश्वास दिलाने में सफल रही। पार्टी ने यह भी वादा किया कि हरियाणा सरकार मुद्रा योजना के अलावा सभी ओबीसी उद्यमियों के लिए 25 लाख रूपये तक के लोन की गारंटी देगी इसके साथ साथ विश्वकर्मा योजना भी समुदाय को पार्टी के साथ मजबूती से जोड़ने में अपनी भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय और प्रदेश की राजनीति में अन्य पिछड़ा वर्ग नेतृत्व के परिणाम स्वरूप भी प्रदेश का पिछड़ा वर्ग स्वंय को प्रभुत्व वर्ग की भूमिका में देखने लगा और भारतीय जनता पार्टी के अनुशासित सिपाही की भूमिका निभाई। छात्रवृति के बहाने दलित वोट बैंक को लुभाया गया। भाजपा ने लोकसभा चुनाव में पार्टी से दूर हुए दलित वोट बैंक को लुभाने पर खास जोर दिया। किसानों को आकर्षित करने के लिए भाजपा ने 24 फसलों को एमएसपी पर खरीदने का वादा किया।

इसके अलावा संकल्प पत्र में काश्तकारों को जमीन पर मालिकाना हक देने की बात भी कही गई। कल्याणकारी योजनाएं और उनके लाभ जिसमें प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, आयुष्मान मुफ्त राशन वितरण जैसी योजनाएं गरीब वर्ग और ग्रामीण क्षेत्रो में भाजपा के पक्ष में रही। धर्म और राष्ट्रवाद को केन्द्रं मे रखकर भाजपा ने बहुसंख्यक समुदाय को अपने पक्ष में सगंठित किया। जिससे विपक्ष का वोट बंटा। जबकि कांग्रेस की हार के पीछे मुख्य कारक के रूप में नेतृत्व की अस्पष्टता और रणनीतिक कमजोरी रही। राहुल गांधी के नेतृत्व पर मतदाताओं का विश्वास उतना

नही बना और पार्टी में अनुशासन, केंद्रिय नेतृत्व की कमजोर पकड़, पार्टी के भीतर गुटबाजी और नेतृत्व का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। भाजपा के मुकाबले कांग्रेस के पास न तो बूथ स्तर पर सगंठित कार्यकर्ता थे,न ही मतदाताओं तक पहुंचने की प्रभावी रणनीति। चुनाव में वैकल्पिक एजेंडा प्रस्तुत नही कर पाई। टिकटों के आवंटन के समय कांग्रेस ने राज्य नेतृत्व के दवाब में युवा और नए चेहरों को ज्यादा मौका नही दिया और पुराने विधायकों को उनके जनविरोध के बावजूद भी टिकट आंवटित किए,जिससे मतदाताआ बदलाव की उम्मीद में भाजपा की ओर झुके। चुनावो में विपक्षी गठंबधन (INDIA गठंबधन) के बीच समन्वय की कमी और अंतर्विरोधों ने कांग्रेस को नुकसान पंहुचाया। चुनाव प्रचार के समय कांग्रेस उम्मीदवारो द्वारा नौकरियों मे भाई भतीजावाद और अपने चेहतों और कार्यकर्ताओं को नौकरी बांटने के वायदों ने भी पार्टी के विरूद्ध माहौल बनाने और आम जनता में पार्टी की छवि को खराब करने का काम किया क्योकि चुनाव में नौकरियों मे पारदर्शिता और निष्पक्षता महत्वपूर्ण कारक और मुद्दे थे। हरियाणा में कांग्रेस आम आदमी पार्टी के बीच समन्वय की कमी रही। दोनों दलों ने एक दूसरे के वोट काटे अनेकों साटों पर कांग्रेस के टिकटार्थियों ने टिकट न मिलने पर अपनी ही पार्टी के विरूद्ध चुनाव निर्दलीय चुनाव लड़ा और समीकरणों को बदलकर अपनी पार्टी के अधिकारिक उम्मीदवार को हराने का काम किया पार्टी नेतृत्व बगावत को रोकने मे असफल रही। भाजपा ने इस विभाजन का भरपूर लाभ उठाया। कांग्रेस के पुराने शासनकाल के घोटाले और जातिवाद आधारित राजनीति को लेकर लोगों में पार्टी के प्रति नकारात्मकता बनी रही।

निष्कर्ष

हरियाणा राज्य का चुनावी भूगोल जाति संरचना और मतदान व्सवहार के बीच एक दिलचस्प संबंध का सुझाव देता है। इसे अक्सर आया राम, गया राम की भूमि कहा जाता है, जहां नेताओं ने सत्ता में बने रहने के लिए खरीद फरोख्त और दल बदल का सहारा लिया। 2024 तक राज्य की राजनीति पर हावी रहे जाट अब चैपियन नही रहें, क्योंकि 2014 के बाद राज्य ने जाटों के वर्चस्व को खत्म करने के लिए अन्य जातियों को एक साथ आते देखा है। 2024 के चुनाव परिणाम एक कहानी बताते हैं कि जाट नेताओं के सत्ता मे आने के लिए अब एससी और अन्य पिछड़ी जातियों का समर्थन एक शर्त है क्योंकि हम देखते हैं कि जाट वर्चस्व वाली राजनीति से धीरे धीरे बहुजातीय गठबधंन की ओर बदलाव हो रहा है। भाजपा द्वारा की गई सोशल इंजीनियरिंग मतदान के रूझानों का विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपर्ण तथ्य बनाती है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक समुदाय हमेशा कांग्रेस का समर्थन करता है और यही कारण है कि उन्होने मेवात क्षेत्र के नूहं जिले की तीनों सीटों पर जीत हासिल की। 2024 के चुनाव परिणाम सह भी साबित करते हैं कि यदि एक प्रभावी नेतृत्व एक अच्छा प्रशासन देता है, तो सत्ता विरोधी भावना की भूमिका शून्य हो जाती है। इसलिए भूगोल में चुनावी अध्ययन हमें किसी क्षेत्र में स्थानीय कारकों, जाति संरचना और चुनावी भागीदारी के बीच जटिल संबंधों को समझने में मदद करता है।

संदर्भ

1. अमानी, के.जेड. (1970).हरियाणा में चुनावः चुनावी भूगोल पर एक अध्ययन. द जियोग्राफर खंड 17, पृ० सं०–27–40

2. चतुवेर्दी, आर (2020). राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018ः अनुसुचित जाति एंव जनजाति निर्वाचन क्षेत्रो का निर्वाचन भौगोलिक अध्ययन, आरजीए के इतिहासः खंड XXXVi~, 2018–2020, पृ० सं०–107–118
3. दीक्षित,एस.के. (1988) हरियाणा में चुनावी भागीदारी का स्थानिक, विश्लेषण, भारत की भौगोलिक समीक्षा, खंड 50, पृ० सं०–1–7 भारत का चुनाव आयोग, नई दिल्ली
4. गुप्ता, आर.एल. (1988) भारत की चुनावी राजनीति या तिलक वासन, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
5. कोठारी,सी.आर. और गर्ग.जी. (2014) रिसर्च मेथोडोलॉजी मेथड्स एंड टेक्निक्स (थर्ड एडिशन) न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स नई दिल्ली
6. रहमान, एम. और खातून, आर. (2018)। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनावों मे मतदाता मतदान का स्थानिक कालिक विश्लेषण (2006–2016) चुनावी भूगोल में एक अध्ययन। सामाजिक विज्ञान और आर्थिक अनुंसंधान के अंतराष्ट्रीय जर्नल,3(8) 3804–3828।
7. सीमा (2014) चुनावी भूगोलः दिल्ली और उसके विधानसभा चुनावों का स्थानिक–कालिक विश्लेषण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डवलपमें रिसर्च, खंड 4,अंक1, पृ० सं०–136–143
8. सिन्हा,एम. (1977) भारत का चुनावी भूगोल : 1971 के संसदीय चुनाव के संदर्भ में,प्रकाशित पी.एच.डी. थीसिस, भूगोल विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
9. यादव, एस.और बिरला, ए (2024)। चुनावी परिदृश्य का अनावरणः हिंडोली विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र का भू–स्थानिक विश्लेषण। इंटरनेशनल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉटस 12(3), 818–823।
10. यादव, एस खान जेड, और शर्मा,डी.के. (2022)। बूंदी नगरपालिका चुनावों में चुनावी विकल्प के स्थानिक,पैठर्न। विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में अभिनव अनुसंधान के अंतराष्ट्रीय जर्नल,11(12), 14461–144681
11. यादव, एस. (2011) बूंदी जिले का एटलस।
12. यादव, संदीप और शर्मा, दिनेश कुमार और खान,जुबेर। (2024)। भू–राजनीतिक गतिशीलता और मतदाता व्यवहारः बूंदी में 2023 राजस्थान विधानसभा चुनावों से अंतदृष्टि। विज्ञान,इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में अंनुसधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 13.16737.10।
13. चटर्जी,पी. (2024,21 जून) चुनावी झटके के बाद, मोदी को भारत की खाद्य नीति में सशोधन करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। रॉयटर्स।
14. चैधरी, डी. (2024, 9 अक्टूबर)। भारत की कांग्रेस पार्टी ने राज्य चुनाव के नतीजों को लेकर चुनाव निकाय से शिकायत की। रॉयटर्स।
15. डेक्कन हेराल्ड. (2024,9 अक्टूबर)। हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 कांग्रेस को हुड्डा पर अत्यधिक निर्भरता की कीमत फिर चुकानी पड़ी। डेक्कन हेराल्ड.
16. कुमार, आर. (2024).हरियाणा हमें 2024 के लोकसभा चुनावों के बारे में क्या बताता है. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 59(38)

17. कुमार, आर. (2024).हरियाणा में क्षेत्रीय और वंशवादी राजनीति और मतदाता व्यवहार की जांच. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियटिव रिचर्स थॉटस, 13(3)
18. सिहं एस.(2024, 10 जुलाई).हरियाणाा चुनावों में जातिगत गतिशीलता को समझनाः एक गहन विश्लेषण। भारतीय थिंक टैक।
19. अरोड़ा, बी. (2024).हरियाणा का राजनीतिक परिदृश्यः बदलती गतिशीलता और 2024 के लोकसभा चुनावों पर इसका प्रभाव। राजनीतिक विज्ञान समीक्षा. 45 (2), पृ० सं०–117–130
20. बंसल, आर और शर्मा, पी. (2023). हरियाणाा में चुनावी व्यवहार 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए रूझान, पैटर्न और भविष्यवाणी।).हरियाणा राजनीति जर्नल,30 (4), पृ० सं०–215–233.
21. चोपड़ा, पी. (2024). हरियाणा में राजनीतिक गठबंधन का गठनः 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए निहितार्थ। जर्नल ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स, 39(1), पृ० सं०–89–104
22. गुप्ता, एस.के. (2023), क्षेत्रीय राजनीति और हरियाणा में चुनाव परिणामों को आकार देने में इसकी भूमिकाः 2024 की भविष्यवाणीयों का एक अध्ययन। साउथ एशियन पॉलिटिकल रिव्यू, 27(3), पृ० सं०–77–92
23. कुमार, ए. (2024)).हरियाणा के 2024 के चुनावों में जाति और समुदाय की भूमिका। भारतीय चुनावी अध्ययन त्रैमासिक, 12(1) पृ० सं०–22–40
24. सैनी,डी.और वर्मा, एन (2023) हरियाणा का चुनावी विकासः 2024 के लोकसभा चुनावों की प्रस्तावना। जर्नल ऑफ स्टेट पॉलिटिक्स 29(5) पृ० सं०–130–145
25. सिहं , आर (2023) हरियाणा के बदलते राजनीतिक गठबंधनः 2024 विधानसभा चुनाव और उसके बाद की स्थिति पर एक करीबी नजर, इंडियन पॉलिटिकल एनालिसिस जर्नल, 14(2) पृ० सं०–56–70
26. शर्मा, के. (2024) हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024ः मुख्य मुद्दे और मतदान व्यवहार जर्नल ऑफ इलेक्टोरल स्ट्रैटेजीज,7 (1) पृ० सं०–101–118